कसरती
हंस

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

मूल्य : ₹50

संस्करण : 2011

लेखक : मि. स्तेलमाख

अनुवादक : मदन लाल 'मधु'

चित्रकार : व. सुतेयेव

ISBN : 978-93-5000-549-1

Kasrati Hans

कसरती हंस
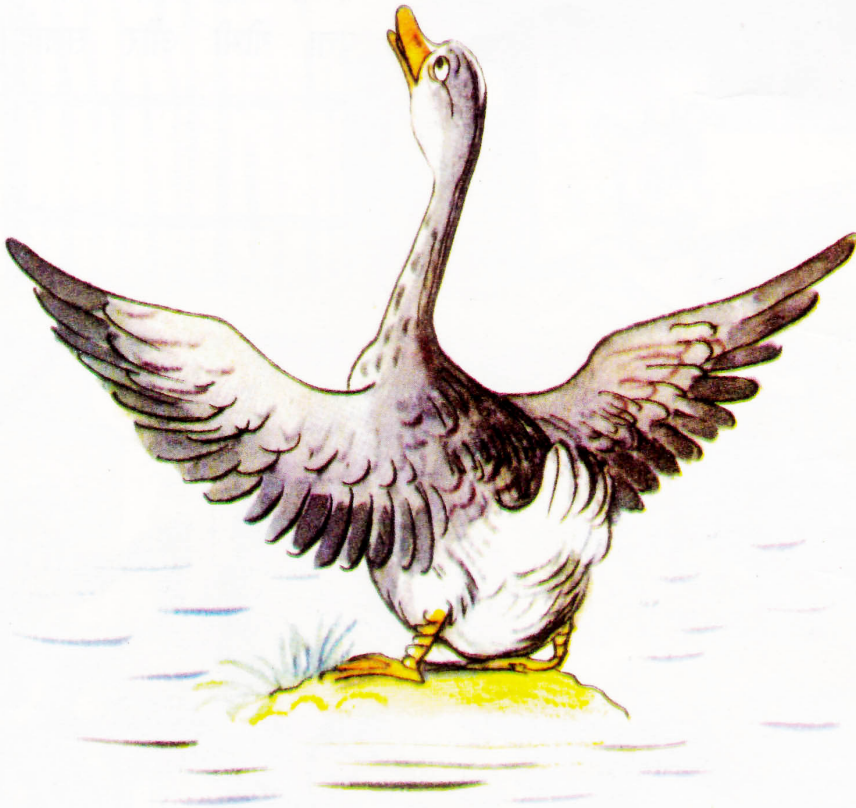
अनुक्रम

बकरे के मेहनती बच्चे

मार्च महीने में बकरे ने
हेंगा और बनाया हल।

आया जब अप्रैल तो उस ने
जोती भूमि लगाकर बल।।

बोयी सब्ज़ी, डाली खाद।
बच्चों को मिल सके कि उसके
पत्ता गोभी और सलाद।।
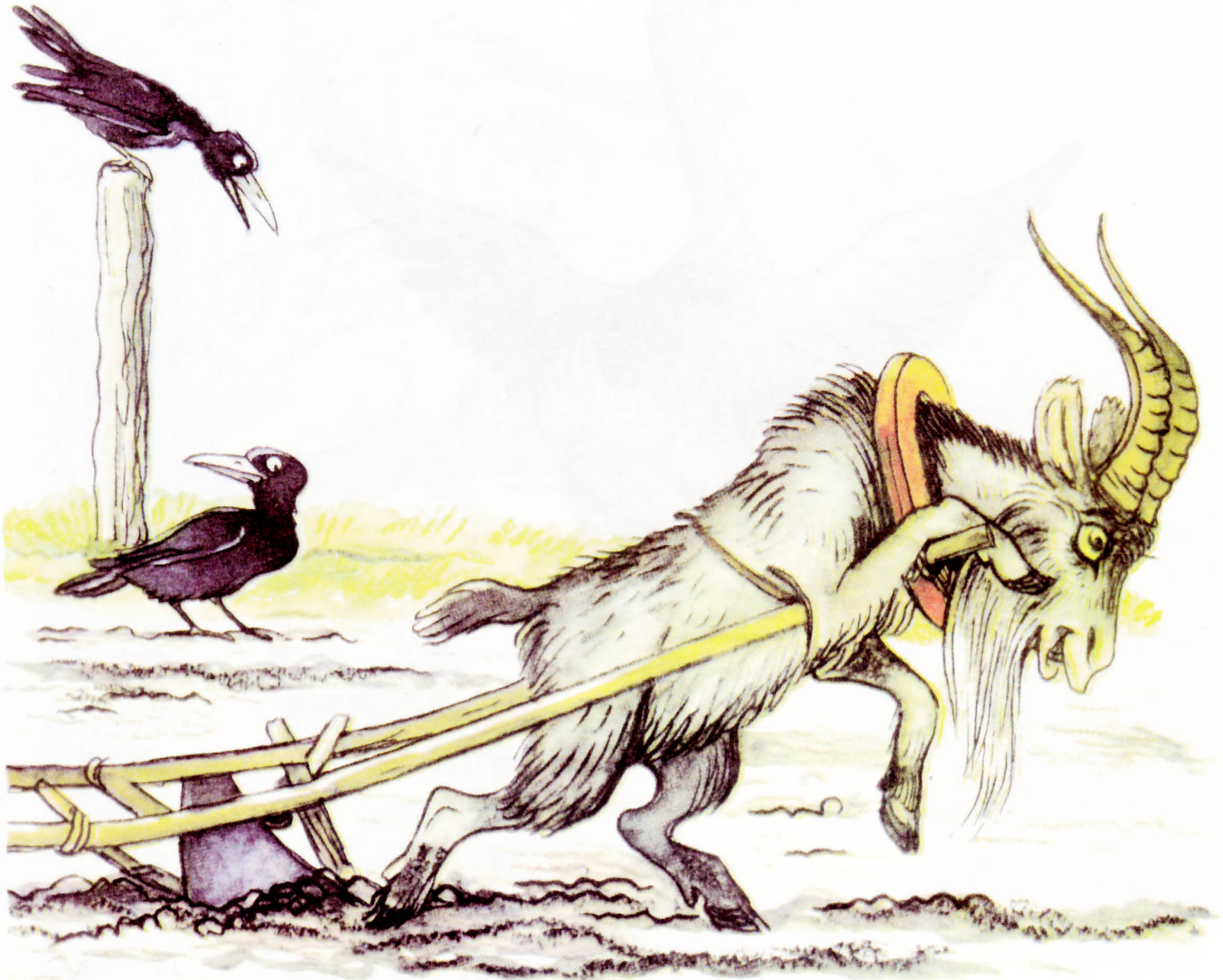
मगर पिता के लिए सभी ने
मिल जुलकर बोये खीरे।
कितने अच्छे हैं ये बच्चे
ये तो सच असली हीरे!
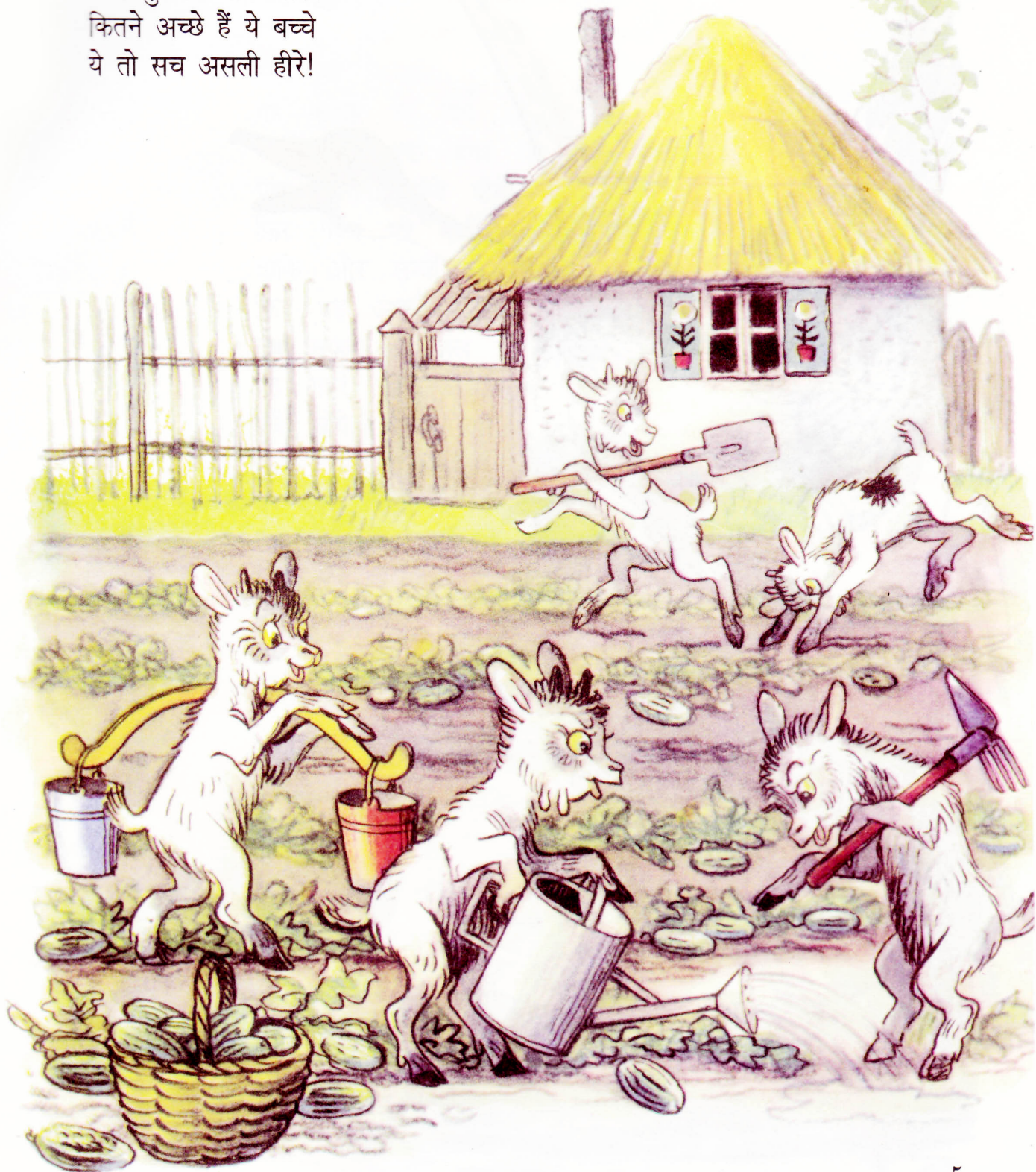
कसरती हंस

पौ फटते ही हंस हमारा जागता।
टीले से वह ओर नदी की भागता।।
हंसों की कसरत सुन्दर।
वह करता हर दिन डट कर।।
सबसे पहले-एक जगह पर दौड़ लगाता।
पंख हिलाता, पंजे दोनों हाथ मिलाता।।
फिर गर्दन की बारी आये।
ताकि और लम्बी हो जाये।।
फिर वह अपनी पूँछ हिलाता।
तब छपाक से जल में जाता।।
वह गहरे पानी में तैरे।
पंजे धोये, पीठ सँवारे।।

नर-बत्तख़ देखे, हर्षाये-
"कसरत ख़ूब हंस को आये।।"

मुर्ग़

पहन क़मीज़ कढ़ी-सी सुन्दर।
मुर्ग़ बैठ दिन भर पीपे पर।।
जल में सूरत देख देख कर।
होता रहता मुग्ध स्वयं पर।।

बगुला नहाता है

बेद झाड़ियों में, जल में,
बगुला नंगे पैर चले।
क्योंकि हर सुबह यह पक्षी
स्नान करे, तन ख़ूब मले।।
चोंच बढ़ाता, शाख़ हिलाता।
ओस कणों को वह झटकाता
उजले-उजले फव्वारे से
गर्दन रगड़-रगड़ चमकाता।।
कुनमुन करे, न वह चिल्लाये-
"ठंडा पानी, कौन नहाये!"

कद्दू

एक डेढ़ मन का कद्दू
कहीं खेत में पड़ा हुआ था।
मादा बगुला औ' बच्चों का
डेरा उस पर जमा हुआ था।।
बोली वह उन से हँस कर-
"हम बैठे हैं पर्वत पर।।"

बुद्धू मछुआ

फांद कगार भोर के तड़के
बिल्ला भाग नदी-तट आया।
बाँध डोर से काँटा उसने
झटपट पानी में लटकाया।
बैठा रहा एक घंटा भर
और दूसरा गया गुजभर,
थी पानी पर टिकी नज़र।
"बिल्ले कितनी मछली मारी?
तू तो सचमुच बड़ा अनाड़ी।।
मछली ख़ाक पकड़ तू पाये।
तू ने तो काँटे पर बुद्धू
कीड़े नहीं लगाये!"
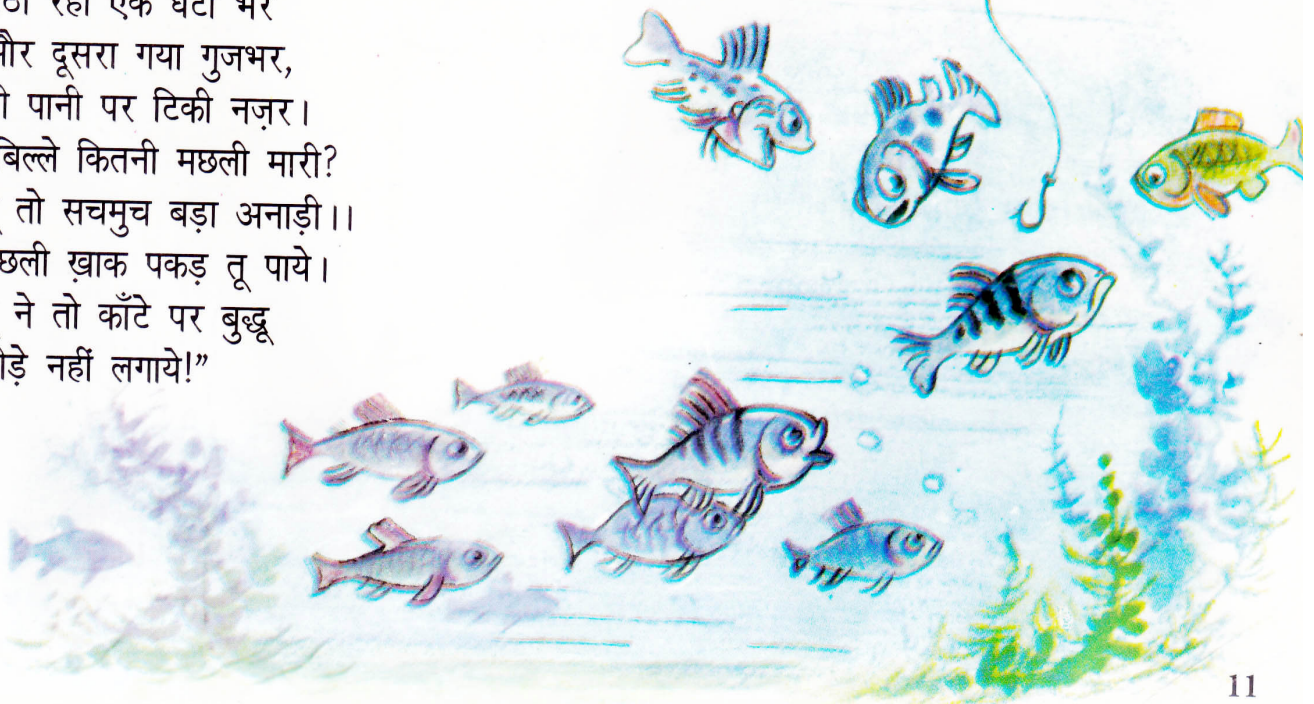
कठफोड़ा

अल्पदृष्टि, बूढ़ा, कठफोड़ा
वह दुकान से चश्मा लाया।
और नाक पर उसे जमाया।।
डटा काम में वह अपने।
लगा बैठ ठक-ठक करने।।

पतझर के दिन, गुबरैला
छिपा छाल के जो पीछे।
कठफोड़ा ने ताड़ा फ़ौरन
झपटा वह तरु पर नीचे।।
किया चोंच से ठक-ठक-ठा।
गुबरैले को पकड़ लिया।।

बूढ़ा कठफोड़ा दुकान से
क्या बढ़िया चश्मा लाया।
बस, कमाल कर दिखलाया।।